



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

Ojas

03/09/2013 02:30 PM

Ujjain, Madhya Pradesh

निर्मित

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	03/09/2013
जन्म समय	14:30
जन्म स्थान	Ujjain, Madhya Pradesh
अक्षांश	23 N 10
देशांतर	75 E 47
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	24:02:53
सूर्योदय	6:9:34
सूर्यास्त	18:42:28

घात चक्र

महीना	श्रावण
तिथि	3,8,13
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	भरणी
योग	वत्र
करण	तैतिल
प्रहर	1
चंद्र	6

पंचांग विवरण

तिथि	कृष्ण त्र्योदशी
योग	परिघ
नक्षत्र	अश्लेषा
करण	वणिजा

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
योनि	मार्जार
गण	राक्षस
नाड़ी	अंत्य
जन्म राशि	कर्क
राशि स्वामी	चन्द्र
नक्षत्र	अश्लेषा
नक्षत्र स्वामी	बुध
चरण	2
युज्जा	मध्य
तत्त्व	जल
नामाक्षर	दू
पाया	चांदी
लग्न	धनु
लग्न स्वामी	गुरु

ग्रहस्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	सिंह	16:58:37	सूर्य	पूर्व फाल्नुनी	शुक्र	9
चन्द्र	--	कर्क	22:39:52	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	8
मंगल	--	कर्क	09:57:44	चन्द्र	पुष्य	शनि	8
बुध	--	सिंह	25:42:25	सूर्य	पूर्व फाल्नुनी	शुक्र	9
गुरु	--	मिथुन	20:21:15	बुध	पुनर्वसु	गुरु	7
शुक्र	--	कन्या	26:47:17	बुध	चित्रा	मंगल	10
शनि	--	तुला	13:17:28	शुक्र	स्वाति	राहु	11
राहु	हाँ	तुला	16:33:07	शुक्र	स्वाति	राहु	11
केतु	हाँ	मेष	16:33:07	मंगल	भरणी	शुक्र	5
लग्न	--	धनु	08:29:36	गुरु	मूल	केतु	1



सूर्य

सिंह
पूर्व फाल्नुनी

योगकारक



चन्द्र

कर्क
अश्लेषा

सम



मंगल

कर्क
पुष्य

योगकारक



बुध

सिंह
पूर्व फाल्नुनी

हानिप्रद



गुरु

मिथुन
पुनर्वसु

सम



शुक्र

कन्या
चित्रा

हानिप्रद



शनि

तुला
स्वाति

हानिप्रद



राहु

तुला
स्वाति

--

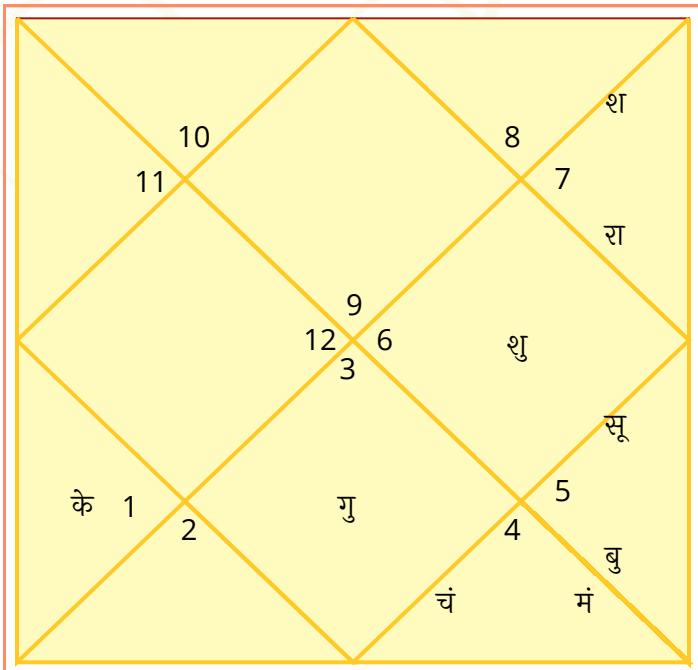


केतु

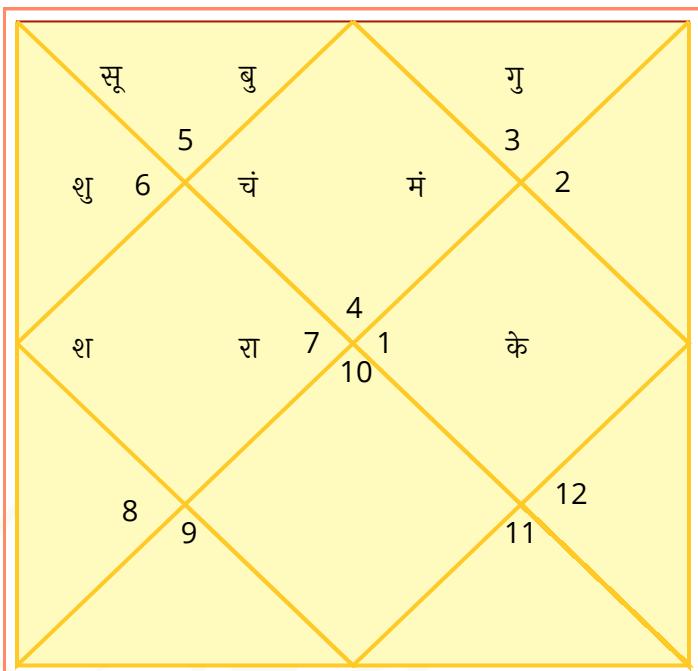
मेष
भरणी

--

लग्न कुण्डली

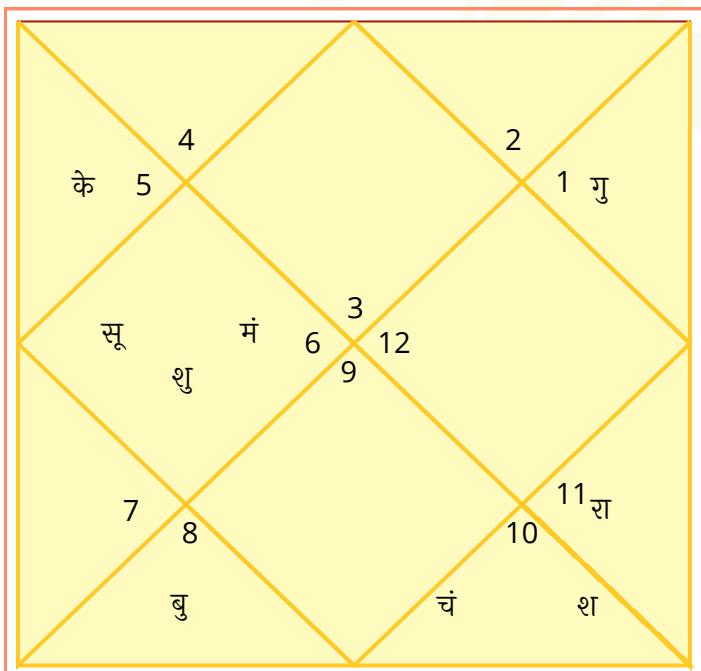


व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते हैं। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओं और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।



चंद्र कुण्डली

लग्न कुण्डली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुण्डली का विर्माण होता है जो चंद्र कुण्डली कहलाती है। चंद्र कुण्डली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुण्डली जितना ही महत्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

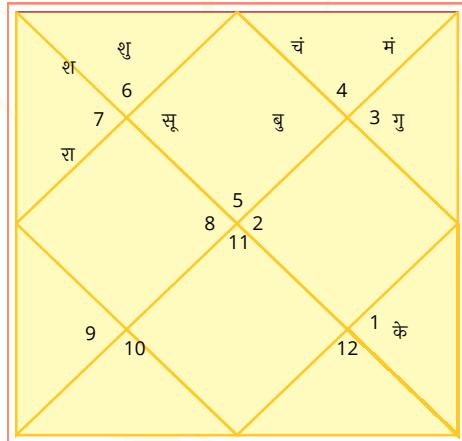


नवमांश कुण्डली

नवांश कुण्डली को वी भागों में बाटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रूप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

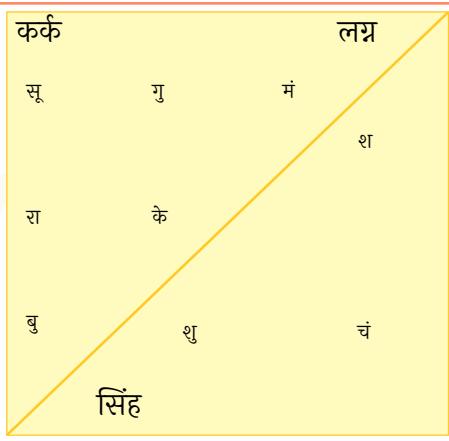
वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली



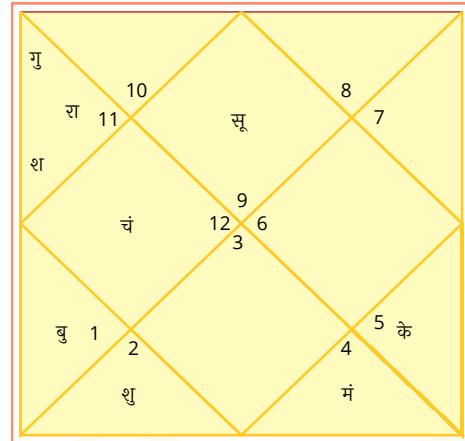
शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली



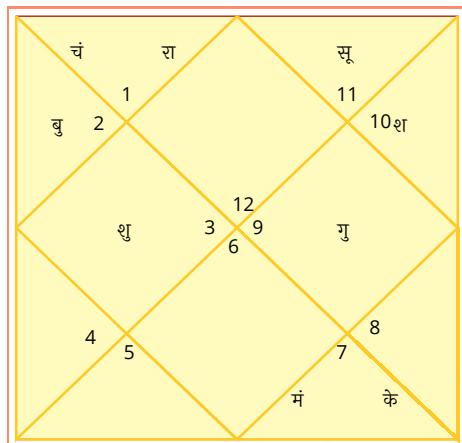
वित्त, धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली



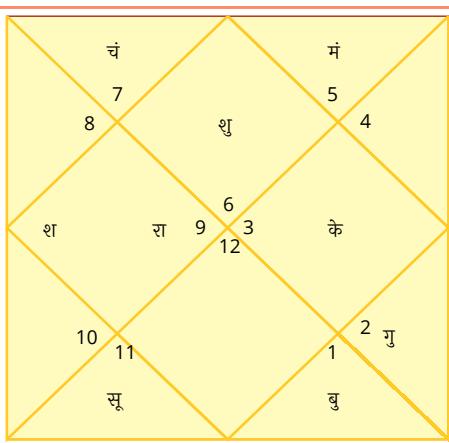
भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली



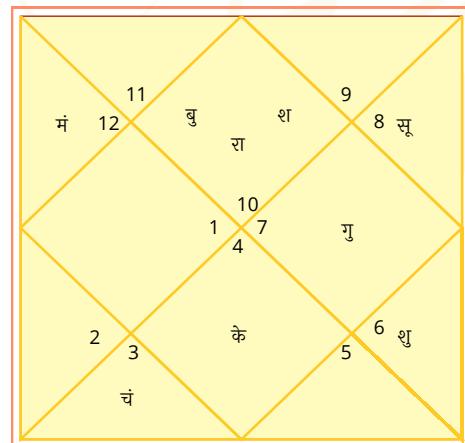
भाग्य

पंचमांश कुंडली



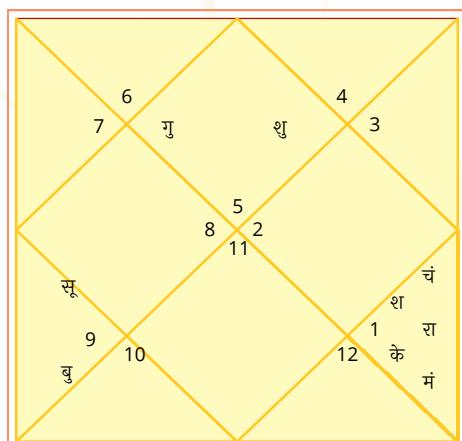
आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली



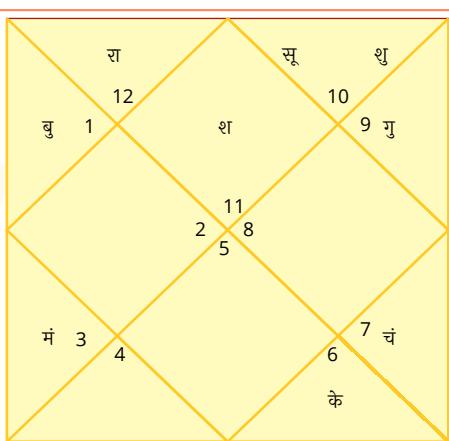
सन्तान

अष्टमांश कुंडली



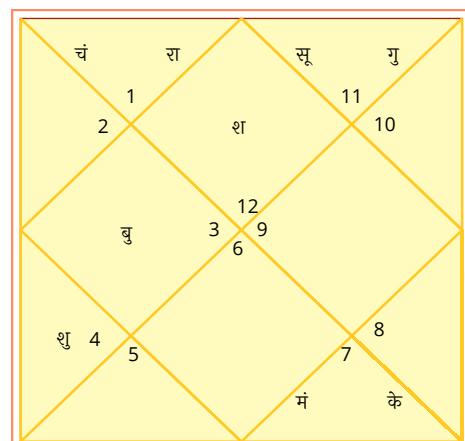
आयु

दशमांश कुंडली



व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली

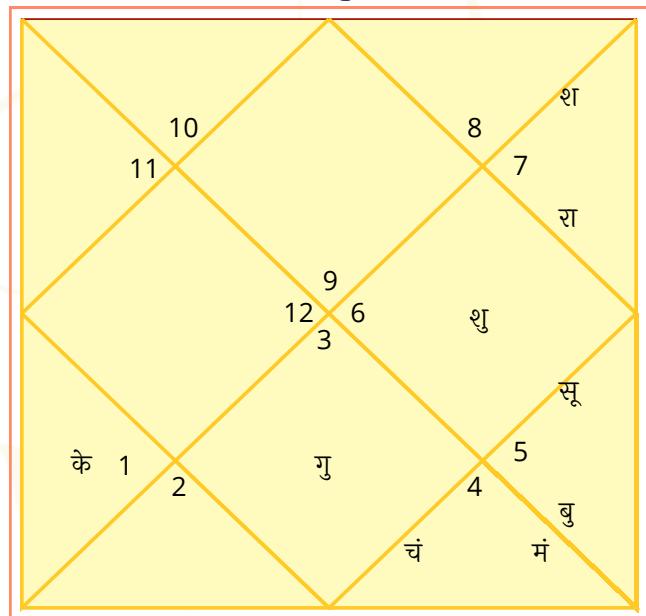


माता-पिता, पैतृक सुख

लग्न - 08:29:36 दशम भाव मध्य - 20:33:49

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	धनु	08:29:36	धनु	25:30:18
2	मकर	12:31:00	मकर	29:31:42
3	कुम्भ	16:32:24	मीन	03:33:06
4	मीन	20:33:49	मेष	03:33:06
5	मेष	16:32:24	मेष	29:31:42
6	वृष	12:31:00	वृष	25:30:18
7	मिथुन	08:29:36	मिथुन	25:30:18
8	कर्क	12:31:00	कर्क	29:31:42
9	सिंह	16:32:24	कन्या	03:33:06
10	कन्या	20:33:49	तुला	03:33:06
11	तुला	16:32:24	तुला	29:31:42
12	वृश्चिक	12:31:00	वृश्चिक	25:30:18

चलित कुंडली



लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

विशेषज्ञाती दशा - ।

बुध

केतु

शुक्र

10-01-2006 10:20
10-01-2023 16:20

10-01-2023 16:20
10-01-2030 10:20

10-01-2030 10:20
10-01-2050 10:20

बुध	08-06-2008 01:47
केतु	05-06-2009 06:44
शुक्र	05-04-2012 03:44
सूर्य	09-02-2013 14:50
चन्द्र	12-07-2014 01:20
मंगल	09-07-2015 06:17
राहु	25-01-2018 15:35
गुरु	02-05-2020 13:11
शनि	10-01-2023 16:20

केतु	08-06-2023 19:47
शुक्र	07-08-2024 22:47
सूर्य	13-12-2024 18:53
चन्द्र	14-07-2025 20:23
मंगल	10-12-2025 23:50
राहु	29-12-2026 12:08
गुरु	05-12-2027 09:44
शनि	13-01-2029 05:23
बुध	10-01-2030 10:20

शुक्र	11-05-2033 22:20
सूर्य	12-05-2034 04:20
चन्द्र	10-01-2036 22:20
मंगल	12-03-2037 01:20
राहु	11-03-2040 19:20
गुरु	10-11-2042 19:20
शनि	10-01-2046 10:20
बुध	10-11-2048 07:20
केतु	10-01-2050 10:20

सूर्य

चन्द्र

मंगल

10-01-2050 10:20
10-01-2056 22:20

10-01-2056 22:20
10-01-2066 10:20

10-01-2066 10:20
10-01-2073 04:20

सूर्य	30-04-2050 00:08
चन्द्र	29-10-2050 15:08
मंगल	06-03-2051 11:14
राहु	29-01-2052 04:38
गुरु	16-11-2052 09:26
शनि	29-10-2053 09:08
बुध	04-09-2054 20:14
केतु	10-01-2055 16:20
शुक्र	10-01-2056 22:20

चन्द्र	10-11-2056 07:20
मंगल	11-06-2057 08:50
राहु	11-12-2058 05:50
गुरु	11-04-2060 05:50
शनि	10-11-2061 13:20
बुध	11-04-2063 23:50
केतु	11-11-2063 01:20
शुक्र	11-07-2065 19:20
सूर्य	10-01-2066 10:20

मंगल	08-06-2066 13:47
राहु	27-06-2067 02:05
गुरु	01-06-2068 23:41
शनि	11-07-2069 19:20
बुध	09-07-2070 00:17
केतु	05-12-2070 03:44
शुक्र	04-02-2072 06:44
सूर्य	11-06-2072 02:50
चन्द्र	10-01-2073 04:20

विश्वोत्तरी दशा - II

राहु	गुरु	शनि
10-01-2073 04:20	10-01-2091 16:20	11-01-2107 16:20
10-01-2091 16:20	11-01-2107 16:20	11-01-2126 10:20
राहु	गुरु	शनि
23-09-2075 08:32	27-02-2093 21:08	14-01-2110 11:23
गुरु	शनि	बुध
15-02-2078 22:56	11-09-2095 04:20	23-09-2112 14:32
शनि	बुध	केतु
22-12-2080 22:02	17-12-2097 01:56	02-11-2113 10:11
बुध	केतु	शुक्र
12-07-2083 07:20	22-11-2098 23:32	02-01-2117 01:11
केतु	शुक्र	सूर्य
29-07-2084 19:38	24-07-2101 23:32	15-12-2117 00:53
शुक्र	सूर्य	चन्द्र
30-07-2087 13:38	13-05-2102 04:20	16-07-2119 08:23
सूर्य	चन्द्र	मंगल
23-06-2088 07:02	12-09-2103 04:20	24-08-2120 04:02
चन्द्र	मंगल	राहु
23-12-2089 04:02	18-08-2104 01:56	01-07-2123 03:08
मंगल	राहु	गुरु
10-01-2091 16:20	11-01-2107 16:20	11-01-2126 10:20

वर्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	केतु	10-01-2023 16:20	10-01-2030 10:20
अंतर्दशा	मंगल	14-07-2025 20:23	10-12-2025 23:50
प्रत्यंतर दशा	शनि	03-09-2025 19:22	27-09-2025 10:07
सूक्ष्म दशा	चन्द्र	17-09-2025 09:15	19-09-2025 08:28

* ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।

योगिनी दशा - १

भ्रामरी (4 वर्ष)

16-11-2011 8:47
16-11-2015 8:47

भद्रिका (5 वर्ष)

16-11-2015 8:47
16-11-2020 8:47

उल्का (6 वर्ष)

16-11-2020 8:47
16-11-2026 8:47

भ्रामरी	26-4-2012 16:47
भद्रिका	15-11-2012 14:47
उल्का	17-7-2013 2:47
सिद्धि	27-4-2014 4:47
संकटा	17-3-2015 20:47
मंगला	27-4-2015 10:47
पिंगला	17-7-2015 14:47
धान्य	16-11-2015 8:47

भद्रिका	27-7-2016 0:17
उल्का	27-5-2017 9:17
सिद्धि	17-5-2018 11:47
संकटा	27-6-2019 7:47
मंगला	17-8-2019 1:17
पिंगला	26-11-2019 12:17
धान्य	26-4-2020 16:47
भ्रामरी	16-11-2020 8:47

उल्का	16-11-2021 14:47
सिद्धि	16-1-2023 17:47
संकटा	17-5-2024 17:47
मंगला	17-7-2024 14:47
पिंगला	16-11-2024 8:47
धान्य	17-5-2025 23:47
भ्रामरी	16-1-2026 11:47
भद्रिका	16-11-2026 8:47

सिद्धि (7 वर्ष)

16-11-2026 8:47
16-11-2033 8:47

संकटा (8 वर्ष)

16-11-2033 8:47
16-11-2041 8:47

मंगला (1 वर्ष)

16-11-2041 8:47
16-11-2042 8:47

सिद्धि	27-3-2028 12:17
संकटा	16-10-2029 16:17
मंगला	26-12-2029 16:47
पिंगला	17-5-2030 17:47
धान्य	16-12-2030 19:17
भ्रामरी	26-9-2031 21:17
भद्रिका	15-9-2032 23:47
उल्का	16-11-2033 8:47

संकटा	27-8-2035 16:47
मंगला	16-11-2035 20:47
पिंगला	27-4-2036 4:47
धान्य	26-12-2036 16:47
भ्रामरी	16-11-2037 8:47
भद्रिका	27-12-2038 4:47
उल्का	27-4-2040 4:47
सिद्धि	16-11-2041 8:47

मंगला	26-11-2041 12:17
पिंगला	16-12-2041 19:17
धान्य	16-1-2042 5:47
भ्रामरी	25-2-2042 19:47
भद्रिका	17-4-2042 13:17
उल्का	17-6-2042 10:17
सिद्धि	27-8-2042 10:47
संकटा	16-11-2042 8:47

योगिनी दशा - II

पिंगला (2 वर्ष)

16-11-2042 8:47
16-11-2044 8:47

धान्य (3 वर्ष)

16-11-2044 8:47
16-11-2047 8:47

भ्रामरी (4 वर्ष)

16-11-2047 8:47
16-11-2051 8:47

पिंगला	26-12-2042 22:47
धान्य	25-2-2043 19:47
भ्रामरी	17-5-2043 23:47
भद्रिका	27-8-2043 10:47
उल्का	27-12-2043 4:47
सिद्धि	17-5-2044 5:47
संकटा	26-10-2044 13:47
मंगला	16-11-2044 8:47

धान्य	15-2-2045 16:17
भ्रामरी	17-6-2045 10:17
भद्रिका	16-11-2045 14:47
उल्का	18-5-2046 5:47
सिद्धि	17-12-2046 7:17
संकटा	17-8-2047 19:17
मंगला	17-9-2047 5:47
पिंगला	16-11-2047 8:47

भ्रामरी	26-4-2048 16:47
भद्रिका	15-11-2048 14:47
उल्का	17-7-2049 2:47
सिद्धि	27-4-2050 4:47
संकटा	17-3-2051 20:47
मंगला	27-4-2051 10:47
पिंगला	17-7-2051 14:47
धान्य	16-11-2051 8:47

भद्रिका (5 वर्ष)

16-11-2051 8:47
16-11-2056 8:47

उल्का (6 वर्ष)

16-11-2056 8:47
16-11-2062 8:47

सिद्धि (7 वर्ष)

16-11-2062 8:47
16-11-2069 8:47

भद्रिका	27-7-2052 0:17
उल्का	27-5-2053 9:17
सिद्धि	17-5-2054 11:47
संकटा	27-6-2055 7:47
मंगला	17-8-2055 1:17
पिंगला	26-11-2055 12:17
धान्य	26-4-2056 16:47
भ्रामरी	16-11-2056 8:47

उल्का	16-11-2057 14:47
सिद्धि	16-1-2059 17:47
संकटा	17-5-2060 17:47
मंगला	17-7-2060 14:47
पिंगला	16-11-2060 8:47
धान्य	17-5-2061 23:47
भ्रामरी	16-1-2062 11:47
भद्रिका	16-11-2062 8:47

सिद्धि	27-3-2064 12:17
संकटा	16-10-2065 16:17
मंगला	26-12-2065 16:47
पिंगला	17-5-2066 17:47
धान्य	16-12-2066 19:17
भ्रामरी	26-9-2067 21:17
भद्रिका	15-9-2068 23:47
उल्का	16-11-2069 8:47

योगिनी दशा - III

संकटा (8 वर्ष)

16-11-2069 8:47
16-11-2077 8:47

मंगला (1 वर्ष)

16-11-2077 8:47
16-11-2078 8:47

पिंगला (2 वर्ष)

16-11-2078 8:47
16-11-2080 8:47

संकटा	27-8-2071 16:47
मंगला	16-11-2071 20:47
पिंगला	27-4-2072 4:47
धान्य	26-12-2072 16:47
ब्रामरी	16-11-2073 8:47
भद्रिका	27-12-2074 4:47
उल्का	27-4-2076 4:47
सिद्धि	16-11-2077 8:47

मंगला	26-11-2077 12:17
पिंगला	16-12-2077 19:17
धान्य	16-1-2078 5:47
ब्रामरी	25-2-2078 19:47
भद्रिका	17-4-2078 13:17
उल्का	17-6-2078 10:17
सिद्धि	27-8-2078 10:47
संकटा	16-11-2078 8:47

पिंगला	26-12-2078 22:47
धान्य	25-2-2079 19:47
ब्रामरी	17-5-2079 23:47
भद्रिका	27-8-2079 10:47
उल्का	27-12-2079 4:47
सिद्धि	17-5-2080 5:47
संकटा	26-10-2080 13:47
मंगला	16-11-2080 8:47

धान्य (3 वर्ष)

16-11-2080 8:47
16-11-2083 8:47

* ध्यान दें - सभी दिनांक दशा
समाप्ति को दर्शाते हैं।

धान्य	15-2-2081 16:17
ब्रामरी	17-6-2081 10:17
भद्रिका	16-11-2081 14:47
उल्का	18-5-2082 5:47
सिद्धि	17-12-2082 7:17
संकटा	17-8-2083 19:17
मंगला	17-9-2083 5:47
पिंगला	16-11-2083 8:47

શુભાશુભ અંક

9

3

5

ભાગ્યાંક

મૂલાંક

નામાંક

આપકા નામ

Ojas

જન્મ દિનાંક

3-9-2013

મૂલાંક

3

મૂલાંક સ્વામી

ગુરુ

મિત્ર અંક

7,5,6,9

સમ અંક

1,2

શત્રુ અંક

4,8

શુભ દિન

મંગલવાર, ગુરુવાર, શુક્રવાર

શુભ રત્ન

પીલા નીલમ

શુભ ઉપરત્વ

પુખરાજ, પીલા તુરમલી

શુભ દેવતા

વિષ્ણુ

શુભ ધાતુ

સોના

શુભ રંગ

પીલા

શુભ મંત્ર

|| ઓમ હિંગ ગુર્વે નમઃ ||

आपके बारे में

आपका मूलांक तीन हैं। मूलांक तीन का स्वामी गुरु है। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप अनुशासन के मामले में काफी कठोर रहेंगे तथा अपने अधीनस्थों से सख्ती से कार्य लेंगे। काम में ढील या शिथिलता बर्दाश्त नहीं करेंगे। इस कारण कभी कभी आपके मातहत ही आपसे शत्रुता करने लगेंगे। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे और दूसरों पर शासन करने की आपकी सहज इच्छा रहेगी। गुरु ग्रह के प्रभाववश आपकी विचारधारा धार्मिक रहेगी तथा विद्या, अध्ययन, अध्यापन, बौद्धिक स्तर के कार्य तथा धर्म - कर्म के क्षेत्र में आपको अच्छी उपलब्धियाँ एवं ख्याति प्राप्त होंगी। मानसिक रूप से आप काफी संतुलित एवं विकसित व्यक्ति होंगे तथा किसी भी विषय को समझने की आप में विशेष क्षमता रहेगी। तर्क एवं ज्ञान शक्ति आपकी अच्छी रहेगी। आप मन से किसी का भी अहित नहीं करेंगे और दूसरों की भलाई करने में भी अपना समय देते रहेंगे। दान - पुण्य के कार्य भी आप काफी करेंगे। सामाजिक स्थिति आपकी काफी अच्छी रहेगी। समाज में आप अग्रणी एवं मुखिया पद का निर्वहन करना अधिक पसंद करेंगे। दूसरों को सच्ची सलाह देना आप अपना धर्म समझेंगे। स्वभाव से आप शांत, कोमल, ह्वदय, मृदुवाणी एवं सत्यवक्ता होंगे। सत्य के मार्ग पर आप चलते हुए कष्टों को भी सहन करेंगे एवं अंत में विजयश्री को प्राप्त करेंगे। स्वास्थ्य आपका साधारणतः अनुकूल ही रहेगा। लेकिन कभी - कभी मंदाग्नि, जठराग्नि, उदार विकार इत्यादि रोगों का सामना करना पड़ेगा।

आपके के लिए शुभ समय

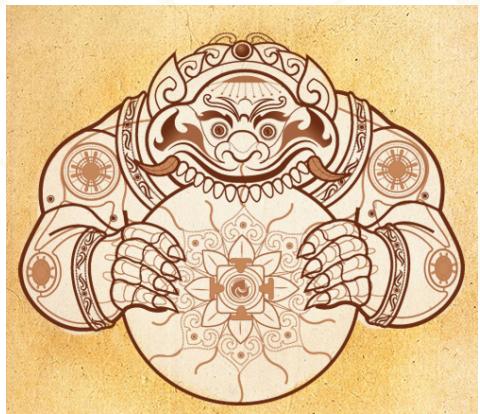
सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपर्युक्त समय में मूलांक तीन प्रभावियों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना आपके लिए विशेष योगकारक रहेगा।

शुभ गायत्री मंत्र

आपके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा। गुरु गायत्री मंत्र - ॐ अं अंगिरसाय विश्वहे दिव्यदेहाय धीमहि तत्रो जीवः

प्रचोदयात् ।

कालसर्प दोष



जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतु ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योंकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में खराब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त

कुलिक

वासुकी

शंखपाल

पद्म

महापद्म

तक्षक

कक्षीक

शंखचूड़

घातक

विषधर

शीषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष



कालसर्प की उपस्थिति

आपकी जन्मपत्रिका में कालसर्प दोष उदित रूप में विद्यमान है।

आपकी कुंडली में कालसर्प दोष पूर्ण रूप से विद्यमान एवं प्रबल है।

कालसर्प नाम

विषधर

दिशा

पूर्ण उदित

कालसर्प दोष फल

आपकी जन्मपत्रिका में शेषनाग नामक कालसर्प योग बन रहा है।

केतु पंचम और राहु ग्यारहवें भाव में हो तो विषधर कालसर्प योग बनाते हैं। जातक को ज्ञानार्जन करने में आंशिक व्यवधान उपस्थित होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में थोड़ी बहुत बाधा आती है एवं स्मरण शक्ति का प्रायः ह्रास होता है। जातक को नाना-नानी, दादा-दादी से लाभ की संभावना होते हुए भी आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। चाचा, चचेरे भाइयों से कभी-कभी मतान्तर या झगड़ा-झंझट भी हो जाता है। बड़े भाई से विवाद होने की प्रबल संभावना रहती है। इस योग के कारण जातक अपने जन्म स्थान से बहुत दूर निवास करता है या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहता है। लेकिन कालान्तर में जातक के जीवन में स्थायित्व भी आता है। लाभ मार्ग में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता रहता है। वह व्यक्ति कभी-कभी बहुत चिंतातुर हो जाता है। धन सम्पत्ति को लेकर कभी बदनामी की स्थिति भी पैदा हो जाती है या कुछ संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। उसे सर्वत्र लाभ दिखलाई देता है पर लाभ मिलता नहीं। संतान पक्ष से थोड़ी-बहुत परेशानी घेरे रहती है। जातक को कई प्रकार की शारीरिक व्याधियों से भी कष्ट उठाना पड़ता है।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्रा घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।
- गृह में मयूर (मोर) पंख रखें।
- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।
- राहु की दशा आने पर प्रतिदिन एक माला राहु मंत्रा का जाप करें और जब जाप की संख्या 18 हजार हो जाये तो राहु की मुख्य समिधा दुर्वा से पूर्णाहुति हवन कराएं और किसी गरीब को उड़द व बीले वस्त्रा का दान करें।
- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंतर्दशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।
- शुभ मुहूर्त में सर्वतोभद्रमण्डल यंत्रा को पूजित कर धारण करें।
- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।
- एक वर्ष तक गणपति अर्थर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।
- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नमः शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

मांगलिक दोष क्या होता है



जिस जातक की जन्म कुण्डली, लग्न/चंद्र कुण्डली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं। कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते हैं। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विवाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे ।
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ॥

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत

19.25%

मांगलिक फल

कुण्डली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है। कुछ साधारण उपायों की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।



भाव के आधार पर

केतु आपके कुंडली में पंचम भाव में है।

अष्टम भाव में मंगल अवस्थित है।



दृष्टि के आधार पर

सप्तम भाव राहु से दृष्ट है।

शनि, आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

शनि, आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

राहु, आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

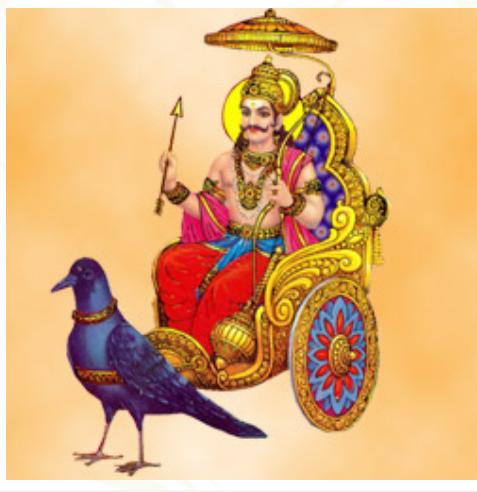
आपकी कुंडली में लग्न भाव को शनि देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को केतु देख रहा है।

मंगल की दृष्टि आपके कुंडली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकार डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है।
- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है।
- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं।
- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है।
- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है।
- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुश्प्रभाव में लाभ मिलता है।
- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें।
- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें।



साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छः मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमें कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी,

अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में हैं



साढ़ेसाती दोष उपस्थित नहीं है।

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिनांक

17-9-2025

शनि राशि

मीन

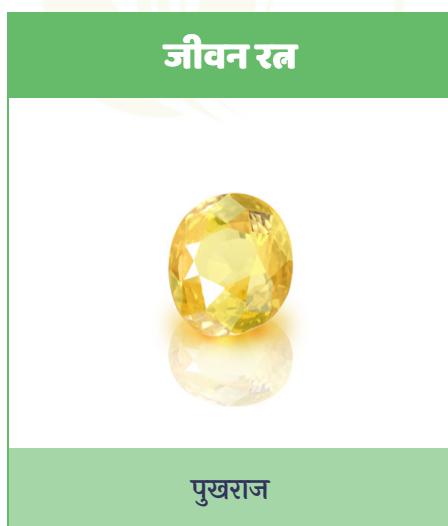
चंद्र राशि

कर्क

वक्री शनि

हाँ

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं। प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है। रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं। ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं, इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है।



लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है। इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात् लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है। इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए।

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का धोतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात् पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है। इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं। पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है। यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का धोतक है। यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है। नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं। इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है।

जीवन रत्न - पुखराज



विकल्प	टोपाज	दिन	गुरुवार
उंगली	तर्जनी	अधिदेवता	गुरु
भार	4 - 5.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण



विवरण

पुखराज रत्न का स्वामी ग्रह बृहस्पति (गुरु) है। शुद्ध पुखराज दोषरहित, चमकदार, दीप्तिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता है। पुखराज धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, ज्ञान, संपत्ति, दीर्घायु, नाम, सम्मान और यश की प्राप्ति होती है। यह बुरी आत्माओं के कुप्रभाव से भी रक्षा करता है।



भार व धातु

पुखराज का वजन 3 कैरेट से अधिक होना चाहिए; परंतु 6, 11 अथवा 15 कैरेट का न हो इस बात का ध्यान रखें। इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके।



पहनने का समय

पुखराज रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार की सुबह धारण किया जा सकता है।



उंगली

मंत्र जाप के बाद, पुखराज को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें।



मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। पुखराज धारण करने के लिए विश्वलिखित मंत्र का 108 बार जाप करें:

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रीं सः गुरवे नमः



विकल्प

पुखराज के स्थान पर पीला मोती, पीला जिक्रोन, पीली तूमली, टोपाज और सिट्रीन (क्वार्ट्ज टोपाज) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं।



सावधानी

ध्यान रहें कि पुखराज को हीरे, नीलम, गोमेद और लहसुनिया के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

कारक रत - मूँगा



विकल्प	लाल सुलेमानी
उंगली	तर्जनी
भार	6 - 10.25 कैरेट

दिन	मंगलवार
अधिदेवता	मंगल
धातु	स्वर्ण



विवरण

लाल मूँगा का स्वामी ग्रह मंगल है। लाल मूँगा व्यक्ति को साहसी बनाता है और उसकी अपने दुश्मनों को पछाड़ने में सहायता करता है। लाल मूँगा दुष्ट आत्माओं, जादू-योना और बुरे स्वप्नों से बचाता है।



भार व धातु

लाल मूँगा का वजन 6 कैरेट से अधिक होना चाहिए। इसे सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत त्वचा को छू सके।



पहनने का समय

लाल मूँगा रत चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी मंगलवार को सूर्योदय के एक घंटे बाद धारण किया जा सकता है।



उंगली

मंत्र जाप के बाद, लाल मूँगे की अंगूठी को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें।



मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। लाल मूँगा धारण करने के लिए विमलिखित मंत्र का 108 बार जाप करें।

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः



विकल्प

लाल मूँगा के स्थान पर संग मुंगी (संग-सितारा), कार्बोलियन और रेड जास्पर (सूर्यकांत मणि) जैसे विभिन्न विकल्प रत भी उपयोग में लाये जा सकते हैं।



प्राण प्रतिष्ठा

लाल मूँगा की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।



सावधानी

ध्यान रहें कि लाल मूँगे को पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रतों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

भाग्य रत्न - माणिक्य



विकल्प	लाल गार्वेट	दिन	शविवार
उंगली	अनामिका	अधिदेवता	सूर्य
भार	3 - 4.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण



विवरण

माणिक रत्न का स्वामी ग्रह सूर्य है। शुद्ध माणिक दोषरहित, चमकदार, दीसिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता है। माणिक धारण करने से उत्तम धन और संपत्ति की प्राप्ति होती है। इससे इच्छा शक्ति और आत्मा को प्रबलता मिलती है। माणिक धारण करने वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है और समाज में उच्च तथा प्रतिष्ठित पद पर विराजमान होता है।



भार व धातु

वजन में कम से कम २ - १/२ कैरेट का दोषरहित माणिक पहना जाना चाहिए। सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में रत्न को जड़ा जाना चाहिए। अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके।



पहनने का समय

माणिक रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी शविवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है।



प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें। माणिक धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें।

ॐ सूर्याय नमः



उंगली

मंत्र जाप के बाद, माणिक को अनामिका (सिंग फिंगर) में धारण किया जा सकता है।



विकल्प

माणिक के स्थान पर लाल स्पिनेल, स्टार रुबी, पाइरप गार्वेट(तामड़ा), लाल ज़िर्कन या लाल तूरमली जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं।



सावधानी

ध्यान रहें कि माणिक को हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।



प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें।



लग्न फल - धनु

स्वामी	गुरु
प्रतीक	धनुष
विशेषताएँ	अग्नि तत्त्व, द्विस्वभाव, पूर्व
भाग्यशाली रत्न	माणिक्य
ब्रत का दिन	गुरुवार

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् ।
सुखं दुःखं स्वभावज्य लग्नभावान्निरीक्षयेत् ॥

धनु लग्न के व्यक्ति आदर्शवादी महत्वाकांक्षी, उत्साही, धार्मिक या नास्तिक, दूर के स्थानों और संस्कृतियों या विचारों में रुचि रखने वाले,, शारीरिक रूप से सक्रिय, जोखिम लेने वाले, पर्यटनशील , प्रसन्नचित्त , बहिर्मुखी, दार्शनिक, कदाचित सिद्धांतवादी, पूर्वाग्रही,सतही ,अच्छे अवसरों की तलाश में और अत्यधिक सक्रिय रहने वाले होते हैं ।

धनु, लग्न की छवि आधे मानव आधे जानवर की है और शायद आप का स्वभाव भी वैसा है । आप अति महत्वाकांक्षी हैं, तथापि आपका स्वभाव सबसे अनियंत्रित इच्छा प्रकृति का हो सकता है। आप जीवन में अपना लक्ष्य या तो बहुत ऊंचा रखेंगे या अधम कार्य भी कर सकते हैं।

“ पशुओं से प्रेम ,मैदानी खेल,खेलकूद , जुआ, साहसिक कार्यों में, और यात्रा में आपकी रुचि रहेगी । आप में एकाग्रता की कमी हो सकती है। आपके परिचित शायद बहुत से होंगे लेकिन दोस्त उनमें से कुछेक ही होंगे ।

आपका रुझान गहराई के रिश्तों की अपेक्षा अनौपचारिक संपर्क बनाने में रहेगा । आप बहुत अधिक अधीर स्वभाव के हैं और सदैव गतिमान रहना पसंद करते हैं ।

आप हमेशा अच्छे अवसरों की तलाश में रहते हैं,लेकिन ना कभी रुकते हैं ना धीरे चलते हैं और ना ही अपने आसपास देखते हैं । धनु लग्न के व्यक्ति मुखर होते हैं और स्पष्ट सीधी बात करते हैं ।

आप की स्पष्टवादिता वजह से आप में निपुणता और कूटनीति की कमी हो सकती है। अवधारणाओं को आप बहुत बहुत महत्व देते हैं। आप आम तौर पर परिस्थिति की पूर्णता को पसंद करते हैं और हर तरह की कम जानकारी आपको नापसंद हैं।

“ आप वादे बहुत करते हैं लेकिन उन्हे पूरा करने के इरादे आप के मन में कम हो सकते हैं। आप या तो जीवन में बहुत ऊँचाईयों को छुएंगे या पतन की राह पर भी जा सकते हैं। आप इनमे से क्या चुकेंगे ? बृहस्पति धनु लग्न का स्वामी है अतः बृहस्पति आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण होगा ।



सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

संयम, जो भी सामने आये(और इसमे विलम्ब ना करें)

सकारात्मक लक्षण

क्रियाशील

प्रसन्नचित

मानवीय

भगवान से डरने वाले

नकारात्मक लक्षण

चंचल

अविर्णायक

उद्धिन्न

बेपरवाह

